लिलिपुट में

गुलिवर



लिसा फ़िंडले

चित्र: एंटोनियो कैपारो

लिलिपुट में

गुलिवर



लिसा फ़िंडले

चित्र: एंटोनियो कैपारो

हेलो, मेरा नाम गुलिवर है.
मैं इंग्लैंड से हूँ.
लेकिन मैंने कई अजीब
और अद्भुत देशों की यात्रा की है.



मैं कभी एक जहाज पर
डॉक्टर हुआ करता था.
वो एक अच्छा जीवन था,
लेकिन वो खतरों से भरा था.



फिर एक दिन,
समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान आया.
हवा ज़ोर से चली.
लहरें टकराईं.
उससे हमारा जहाज़ टुकड़े-टुकड़े हो गया.





मैं तब तक तैरता रहा
जब तक कि मेरे हाथ
पूरी तरह से ढीले नहीं हो गए.
आखिरकार, मैं ज़मीन पर पहुँच गया.
मैं वहीं गिरकर सो गया.

जब मैं उठा,
मैं अपने हाथ या पैर
हिला नहीं पा रहा था.
मैं ज़मीन से
कई-कई रस्सियों से बंधा हुआ था.
वो सब किसने किया?



मुझे लगा जैसे कुछ
मेरे पैर पर चढ़ रहा है.
वह मेरे पेट तक पहुँच गया.
क्या वह कोई चिड़िया थी?
या कोई चूहा?





नहीं!
वह एक छोटा सा आदमी था
जो मेरे हाथ से बड़ा नहीं था.
मुझे लगा कि मैं सपना देख रहा हूँ.

जब मैं फिर से उठा,
तो मैं पहियों वाले
एक बड़े चबूतरे पर था.
जिसे पंद्रह सौ छोटे घोड़े खींच रहे थे.





वे छोटे लोग मुझे
एक पुराने मंदिर में ले गए.
वहां उन्होंने मुझे दीवार से
इक्यानवे छोटी-छोटी
ज़ंजीरों से जकड़ दिया.
मैं खुद को छुड़ा नहीं पाया!

कई लोग मुझे देखने आए.
उन्होंने मुझे
"पहाड़ जैसा आदमी" कहा.
कुछ लोग अच्छे थे.
कुछ लोग बुरे थे
बुरे लोगों ने मुझ पर तीर चलाए.



मैंने कुछ बुरे लोगों को उठाया.
मैंने उन्हें अपनी जेब में रख लिया.
फिर मैंने एक को जेब से निकाला.
मैंने अपना मुँह पूरा खोला.
लोग चीख पड़े.





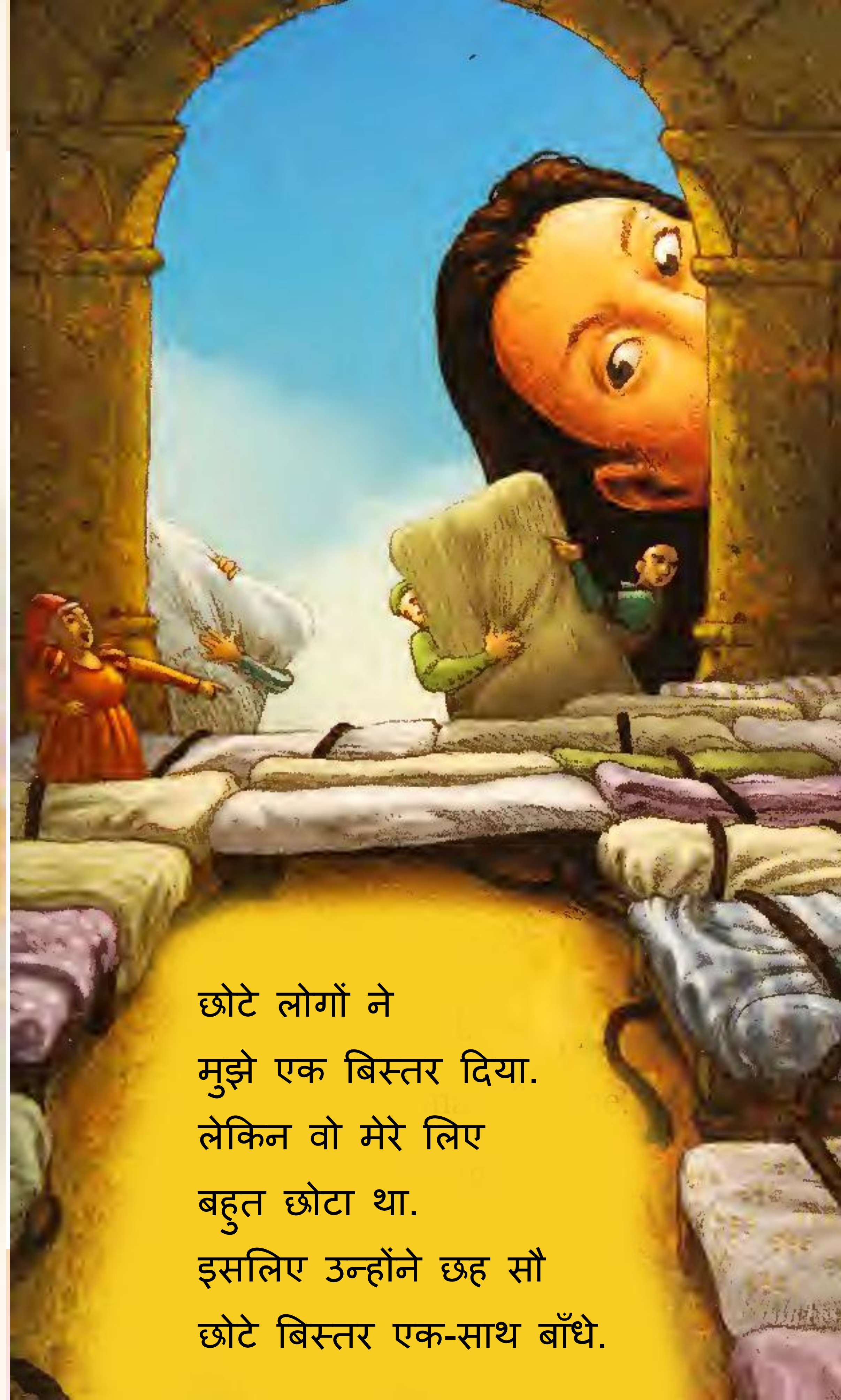
लेकिंग मैंने उस आदमी को खाया नहीं.
मैंने उसे वापस ज़मीन पर लिटा दिया.
लोग खुशी से झूम उठे.



फिर छोटे लोगों ने
मुझे पसंद किया.
उन्होंने मुझे नए कपड़े दिए.
मैं उनके लिए बहुत बड़ा था.
इसलिए तीन सौ दर्जियों ने
मेरे लिए एक नया सूट सिला.

छोटे लोगों ने मुझे खाना दिया.
मैं अभी भी भूखा था.
इसलिए उन्होंने मुझे हर दिन
खाने के लिए चालीस भेड़ें
और छह गायें दीं!





छोटे लोगों ने
मुझे एक बिस्तर दिया.
लेकिन वो मेरे लिए
बहुत छोटा था.
इसलिए उन्होंने छह सौ
छोटे बिस्तर एक-साथ बाँधे.

छोटे लोग अब मुझसे नहीं डरते थे.
वे मेरी हथेली पर नाचते थे.
वे मेरे बालों में
लुका-छिपी खेलते थे.







फिर छोटे लोगों ने
मेरे पैरों के बीच से
एक परेड निकाली.



उन्होंने मुझे अपनी
भाषा भी सिखाई.
उन्होंने मुझे बताया कि
उनके देश का नाम लिलिपुट था.



लेकिन फिर भी उन्होंने
मुझे आज़ाद नहीं किया.
मुझे उनकी मदद करने के
लिए राज़ी होना पड़ा.
वो जो भी माँगते, मुझे वो मदद करनी पड़ती.

मुझे अपनी जेब में रखी
चीज़ें भी उन्हें देनी पड़ीं.





मैंने उन्हें अपना कंघा दिया.
लेकिन वो उनके सिर के लिए
बहुत बड़ा था.
मैंने उन्हें अपनी घड़ी दी.
उनके हाथ उसे पकड़ पाने
के लिए बहुत छोटे थे.



आखिरकार उन्होंने
मेरी ज़ंजीरें खोल दीं!



मैं महल देखने गया.
मैंने शाही परिवार को देखा.

महल में लोग रस्सियों पर
नाच और कूद रहे थे.
जो सबसे ऊँचा कूदता था
उसे बहुत अच्छी नौकरी मिलती थी.



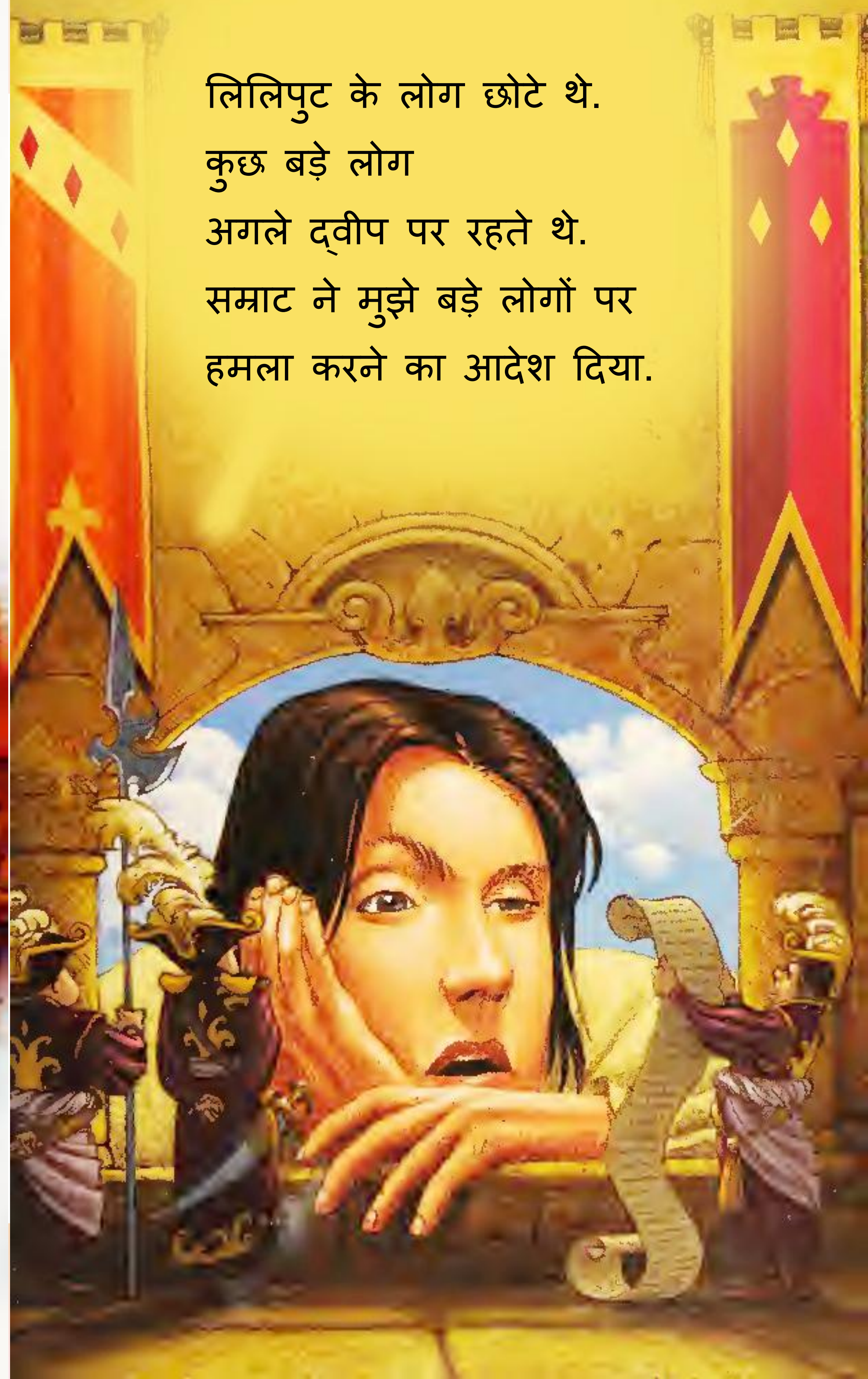
वहाँ लोग बेतुकी बातों पर बहस करते थे.
कुछ लोग कहते कि
कम ऊँची एड़ी वाले जूते
सबसे अच्छे होते हैं.
कुछ लोग कहते कि
ऊँची एड़ी वाले जूते
सबसे अच्छे होते हैं.



वे इस बात पर बहस करते
कि अंडे किस तरफ़ से फोड़ें?
क्या अंडे छोटे सिरे
से फोड़ने चाहिए?
या बड़े सिरे से?



लिलिपुट के लोग छोटे थे.
कुछ बड़े लोग
अगले द्वीप पर रहते थे.
सम्राट ने मुझे बड़े लोगों पर
हमला करने का आदेश दिया.



मैंने एक योजना बनाई.
मैंने कई छोटी रस्सियों को लेकर
एक बड़ी रस्सी में बुना.
मैंने रस्सी में लोहे के हुक लगाए.



मैंने अपने जूते और मोज़े उतार दिए.
फिर मैं समुद्र में चला गया.



बड़े लोगों ने मुझे आते हुए देखा.
उन्होंने मुझ पर तीर चलाए.
तीर इतने छोटे थे कि वे मुझे
ज़्यादा चोट नहीं पहुँचा सके.



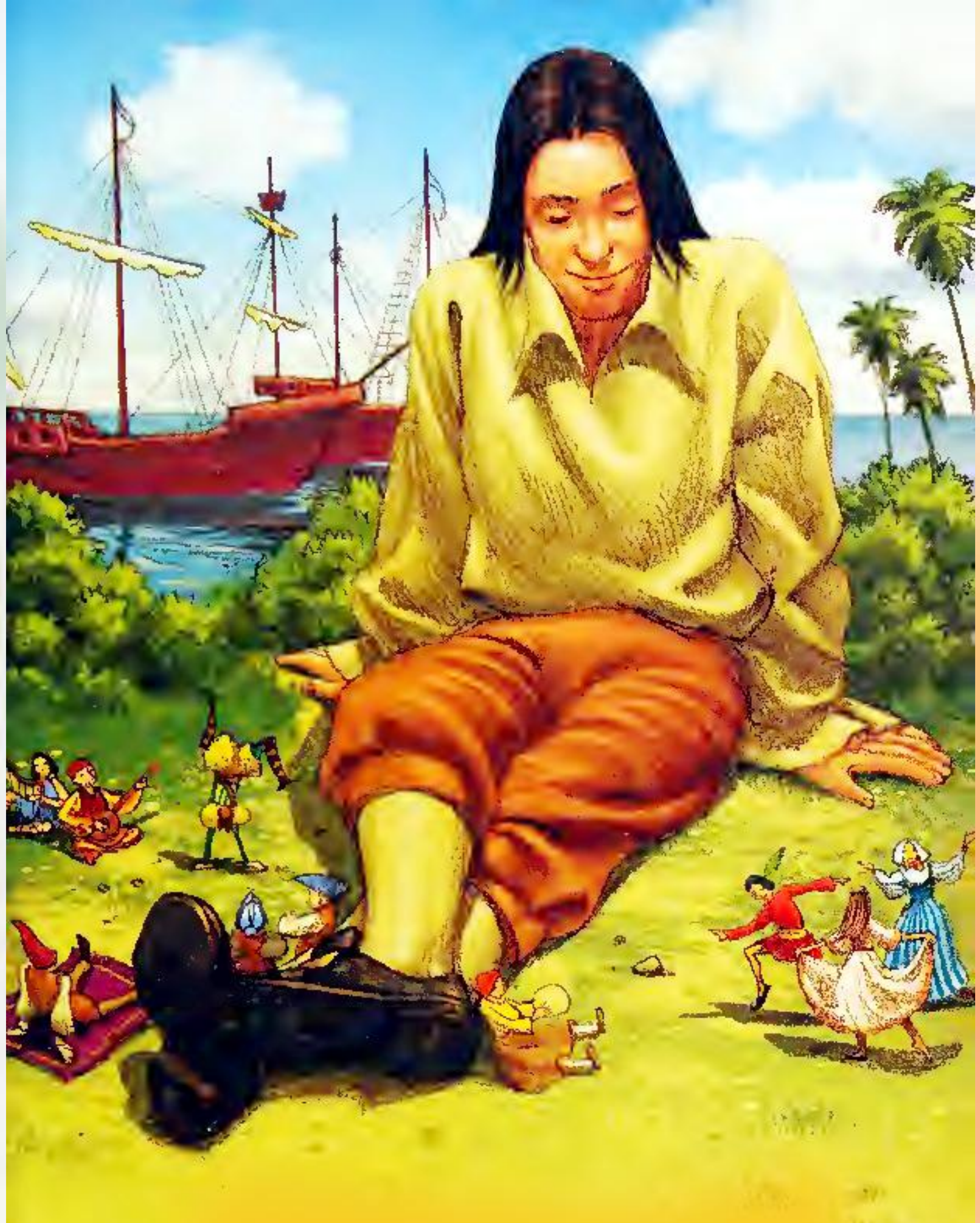
बड़े लोग डर गए.

वे अपने जहाज़ों से कूद गए.

मैंने जहाजों पर हुक फंसाए

और उन्हें घसीटकर ले आया.





मैं जहाजों को

वापस लिलिपुट ले गया.

फिर युद्ध समाप्त हो गया था.

मैंने हमेशा अपने दोस्तों की
मदद करने की कोशिश की.
एक रात,
सैकड़ों छोटे लोगों ने
मुझे जगाया.





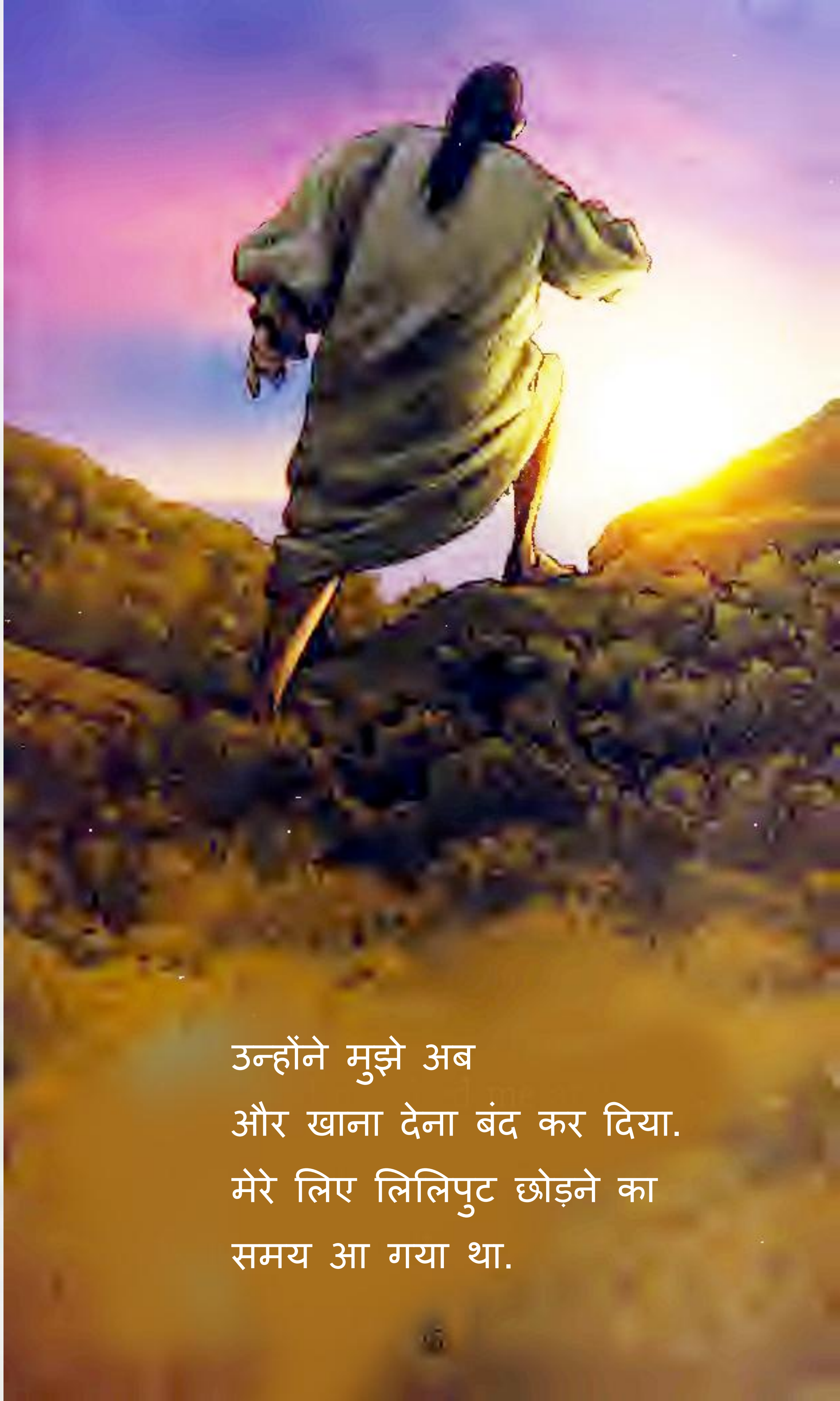
शाही महल में आग लग गई.
महारानी को मेरी
मदद की ज़रूरत थी!

आग बुझाने के लिए
पानी नहीं था.
इसलिए मैंने
पूरे महल में पेशाब कर दिया.
उससे महारानी बहुत गुस्सा हुईं.



छोटे लोग मुझ से
महल पर पेशाब
करने के लिए गुस्सा हुए.





उन्होंने मुझे अब
और खाना देना बंद कर दिया.
मेरे लिए लिलिपुट छोड़ने का
समय आ गया था.

मुझे समुद्र में
एक नाव तैरती हुई मिली.
मेरी किस्मत अच्छी थी!
नाव मेरे लिए बिल्कुल
सही नाप की थी.





फिर मैं वहां से चल दिया
अपने अगले साहसिक कार्य के लिए.



समाप्त